



# फरीदा की दावत

लेखिका: मैगन डॉबसन सिप्पी

फरीदा हर शाम घूमने निकलती है।

एक खाली टिफ़िन का डब्बा और एक बड़ी सी पानी की बोतल साथ में लेकर।

पहला पड़ाव, उसका रसोईघर।

“क्या मैं कच्चे चावल के कुछ दाने ले सकती हूँ?”

बाहर, दो डग पर सब्ज़ी का ठेला लगता है।

“मैं आज कितने पिचके हुए टमाटर ले सकती हूँ?”

अगले तीन कदम पर चाय की दुकान है।

“कुछ टूटे-फूटे बिस्कुट मिलेंगे क्या?”

वहाँ से चार कदम, समुद्र तट पर।

“मेरे लिए सबसे ज़्यादा दुर्गन्ध वाली मछली रखी है न!”

और पाँच छलाँग पर कुम्हार की दुकान है।

“मेरे लिए टूटे हुए किनारों वाले कटोरे रखे हैं क्या?”



**PRATHAM  
BOOKS**

A Book in Every Child's Hand



This story has been provided for free under the CC-BY license by [Pratham Books](http://Pratham Books). Illustrated by Jayesh Sivan.





कच्चे चावल के दाने!  
पिचके हुए टमाटर!  
बिस्कुट का चूरा!  
बदबूदार मछलि!  
टूटे किनारे वाले कटोरे!  
आखिर फरीदा क्या गुल खिलाने वाली है?

“म्याऊँ! म्याऊँ!” बिल्ली की खुराक!  
“भों! भों!” कुत्ते का नाश्ता!  
“काँव! काँव!” कौओं की दावत!  
“चीं! चीं!” गौरैया का खाना!  
खाने का डिब्बा अब एकदम खाली है...  
...सिर्फ कल तक के लिए!

समाप्त

Click below to follow us:

